विशद

बड़े बाबा विधान

माण्डला

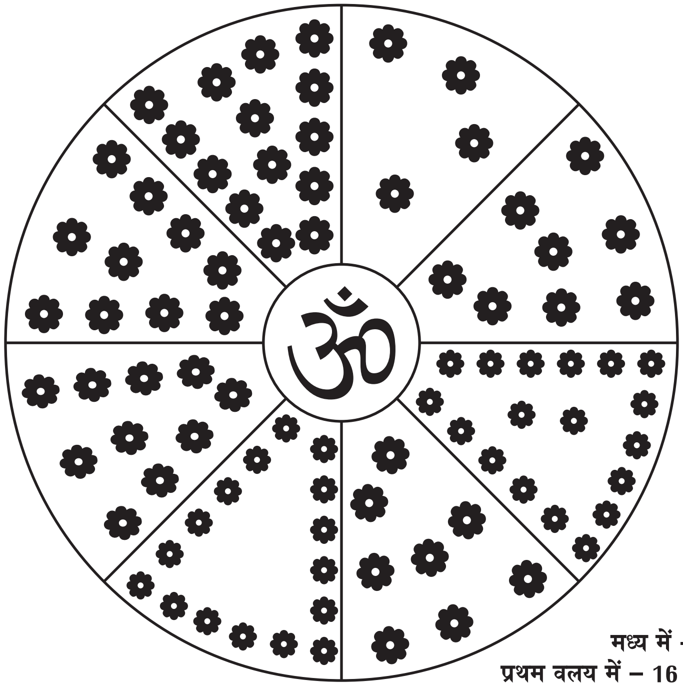

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय में – 16 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 10 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 10 अर्घ्य
चतुर्थ वलय में – 14 अर्घ्य
पंचम वलय में – 4 अर्घ्य
षष्टम वलय में – 8 अर्घ्य
सप्तम वलय में – 18 अर्घ्य
अष्टम वलय में – 8 अर्घ्य
कुल 88 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

कृति : **विशद बड़े बाबा विधान**

कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री १०८ विशदसागरजी महाराज

संस्करण : प्रथम-२०१५ ' प्रतियाँ : १०००

संकलन : मुनि श्री १०८ विशालसागरजी महाराज

सहयोगी : क्षुल्लक श्री १०५ विसोमसागरजी महाराज
क्षु. श्री भक्तिभारती माताजी, क्षु. श्री वात्सल्यभारती माताजी

संपादन : ब्र.ज्योतिदीदी९८२९०७६०८५,ब्र,आस्था दीदी९६६०९९६४२५, ब्र. सपना दीदी९८२९१२७५३३ ब्र. आरती दीदी

प्राप्ति स्थल : १. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
२१४२, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट
मनिहारों का रास्ता, जयपुर
ोन : ०१४१-२३१९९०७ द्धघरत्रः मो. : ९४१४८१२००८

२. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-१०७, बुध विहार, अलवर, मो. : ९४१४०१६५६६

३. विशद साहित्य केन्द्र
श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी द्धहरियाणात्रः, ९८१२५०२०६२, ०९४१६८८८८७९

४. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन
जय [illegible] ५८६१ नेहरू गली
[illegible]
मो. ०९८१८११५९७१, ०९१३६२४८९७१

मूल्य [illegible]

अर्थ सौजन्य :-
प्रमोद गंगवाल प्रदीप गंगवाल
47/111, किरण पथ, मानसरोवर, जयपुर
मो.: 09460541762

मुद्रक : **पारस प्रकाशन**, शाहदरा, दिल्ली. फोन नं. : 9811374961, 9818394651
9811363613, E-mail : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

विशाल हृदय के उद्‌गार

जन-जन के आराध्य जहाँ के दर्शन मात्र से ही अपूर्व आनन्द आत्मानुभूति के साथ कई लोगों की मनोकामनाएं पूर्ण होती देखी जाती है। ऐसे कुण्डलपुर के बड़े बाबा श्री ऋषभदेव स्वामी की विशाल पद्मासन प्रतिमा को हम यही से अपने अन्तरंग के विशुद्ध परिणामों के साथ नमन करते है।

हमने सर्वप्रथम सन् 2001 में महामस्तकाभिषेक के समय कुण्डलपुर के बड़े बाबा श्री ऋषभदेव स्वामी व कुण्डलपुर के छोटे बाबा आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी के दर्शन किए थे। उस समय की यादों को अब तक हृदय में संजोए रखा है दुबारा दर्शन लाभ अब तक ना मिला। बाबा का आकर्षण ही कुछ इस प्रकार का है कि जो एक बार भी दर्शन कर लेता है बस फिर उन्हीं का होकर रह जाता है। हमने अपने गुरुवर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज से तिजारा चातुर्मास में निवेदन किया कि हे गुरुवर आपके द्वारा रचित 108 प्रकार के विधान हमने यहाँ चातुर्मास में करवाएं। लेकिन इसमें बड़े बाबा का विधान तो आया ही नहीं। अब आप अपनी मधुर लेखनी से बड़े बाबा का विधान और लिखे सरल प्रकृति के हमारे गुरुवर ने हमारी विनती को स्वीकार कर अपने अन्तश के भावों को बड़े बाबा की भक्ति की और केन्द्रित किया। ध्यान लगाया अन्तश से निकले शब्दों को आगमानुसार एक माला के रूप में पिरोकर इस कुण्डलपुर विधान की रचना की अधिक संमय तक बड़े बाबा के सन्निकट रहने में यह विधान कारण बनेगा।

आप भव्य माण्डले की रचना कर पारिवारिक जन एवं समाज के सहयोग से विद्वत वर्ग की उपस्थिति में संगीत की मधुर लहरियों के साथ कभी भी यह विधान सम्पन्न करवा सकते है यदि सामान्य स्तर पर करना है तो माण्डले की रचना किए बिना अष्ट द्रव्य से थाली में भी आप यह विधान सम्पन्न कर अथाह पुण्य का अर्जन कर सकते है।

पुनः गुरुवर 108 श्री विशदसागर जी के चरणों में इस महान उपकार के लिए बारम्बार नमोस्तु-3

मुनि विशाल सागर (संघस्थ)
वर्षायोग-2014 (तिजारा)

विनय पाठ

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ॥
कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान्॥
दुखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।
सुर-नर-किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान॥
अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज॥
समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश॥
निर्मल भावों से प्रभू, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश॥
भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार॥
करके तव पद अर्चना, विघ्न रोग हों नाश।
जन-जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश॥
इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार॥
निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभू! करते स्वयं समान॥
अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव।
जब तक मम जीवन रहे, ध्याऊँ तुम्हें सदैव॥
परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल॥
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ती धाम।
चौबीसों जिनराज को, करते 'विशद' प्रणाम॥

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।
हरे अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान॥1॥
मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध॥2॥
मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवज्झाय।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय॥3॥
मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म॥4॥
मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव॥5॥
इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धी सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार॥6॥
मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान॥7॥

अथ् अर्हत पूजा प्रतिज्ञायां.....।पुष्पांजलि क्षिपामि॥

यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना एवं पूजन की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। (जो शरीर पर वस्त्र एवं आभूषण हैं या जो भी परिग्रह है, इसके अलावा परिग्रह का त्याग एवं मंदिर से बाहर जाने का त्याग जब तक पूजन करेंगे तब तक के लिए करें।)

इत्याशीर्वाद:

पूजा पीठिका (हिन्दी भाषा)

ॐ जय जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोएसव्वसाहूणं॥
अरहन्तों को नमन् हमारा, सिद्धों को करते वन्दन।
आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्याय का है अर्चन॥
सर्वलोक के सर्व साधुओं, के चरणों शत्शत् वन्दन।
पञ्च परम परमेष्ठी के पद, मेरा बारम्बार नमन्॥

ॐ ह्रीं अनादि मूलमंत्रेभ्यो नम:। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल चार-चार हैं उत्तम, चार शरण हैं जगत् प्रसिद्ध।
इनको प्राप्त करें जो जग में, वह बन जाते प्राणी सिद्ध॥
श्री अरहंत जगत् में मंगल, सिद्ध प्रभू जग में मंगल।
सर्व साधु जग में मंगल हैं, जिनवर कथित धर्म मंगल॥
श्री अरहंत लोक में उत्तम, परम सिद्ध होते उत्तम।
सर्व साधु उत्तम हैं जग में, जिनवर कथित धर्म उत्तम॥
अरहंतों की शरण को पाएँ, सिद्ध शरण में हम जाएँ।
सर्व साधु की शरण केवली, कथित धर्म शरणा पाएँ॥

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चाल टप्पा)

अपवित्र या हो पवित्र कोई, सुस्थित दुस्थित होवे।
पंच नमस्कार ध्याने वाला, सर्व पाप को खोवे॥
अपवित्र या हो पवित्र नर, सर्व अवस्था पावें।
बाह्यभ्यन्तर से शुचि हैं वह, परमातम को ध्यावें॥
अपराजित यह मंत्र कहा है, सब विघ्नों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी॥
पञ्च नमस्कारक यह अनुपम, सब पापों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी॥
परं ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, अर्हं अक्षर माया।
बीजाक्षर है सिद्ध संघ का, जिसको शीश झुकाया॥
मोक्ष लक्ष्मी के मंदिर हैं, अष्ट कर्म के नाशी।
सम्यक्त्वादि गुण के धारी, सिद्ध नमूँ अविनाशी॥
विघ्न प्रलय हों और शाकिनी, भूत पिशाच भग जावें।
विष निर्विष हो जाते क्षण में, जिन स्तुति जो गावें॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान॥

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्राणि तत्त्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान (हिन्दी)

(शम्भू छन्द)

तीन लोक के स्वामी विद्या, स्याद्वाद के नायक हैं।
अनन्त चतुष्टय श्री के धारी, अनेकान्त प्रगटायक है॥
मूल संघ में सम्यक् दृष्टी, पुरुषों के जो पुण्य निधान।
भाव सहित जिनवर की पूजा, विधि सहित करते गुणगान॥1॥

जिन पुंगव त्रैलोक्य गुरु के, लिए 'विशद' होवे कल्याण।
स्वाभाविक महिमा में तिष्ठे, जिनवर का हो मंगलगान॥
केवल दर्शन ज्ञान प्रकाशी, श्री जिन होवें क्षेम निधान।
उज्ज्वल सुन्दर वैभवधारी, मंगलकारी हों भगवान॥2॥

विमल उछलते बोधामृत के, धारी जिन पावें कल्याण।
जिन स्वभाव परभाव प्रकाशक, मंगलकारी हों भगवान॥
तीनों लोकों के ज्ञाता जिन, पावें अतिशय क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों में, विस्तृत ज्ञानी हैं भगवान॥3॥

परम भाव शुद्धी पाने का, अभिलाषी होकर के नाथ।
देश काल जल चन्दनादि की, शुद्धी भी रखकर के साथ॥

जिन स्तवन जिन बिम्ब का दर्शन, ध्यानादी का आलम्बन।
पाकर पूज्य अरहन्तादी की, करते हम पूजन अर्चन॥4॥

हे अर्हन्त! पुराण पुरुष हे!, हे पुरुषोत्तम यह पावन।
सर्व जलादी द्रव्यों का शुभ, पाया हमने आलम्बन॥
अति दैदीप्यमान है निर्मल, केवल ज्ञान रूपी पावन।
अग्नी में एकाग्र चित्त हो, सर्व पुण्य का करें हवन॥5॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(दोहा छन्द)

श्री ऋषभ मंगल करें, मंगल श्री अजितेश।
श्री संभव मंगल करें, अभिनंदन तीर्थेश॥
श्री सुमति मंगल करें, मंगल श्री पद्मेश।
श्री सुपार्श्व मंगल करें, चन्द्रप्रभु तीर्थेश॥
श्री सुविधि मंगल करें, शीतलनाथ जिनेश।
श्री श्रेयांस मंगल करें, वासुपूज्य तीर्थेश॥
श्री विमल मंगल करें, मंगलानन्त जिनेश।
श्री धर्म मंगल करें, शांतिनाथ तीर्थेश॥
श्री कुन्थु मंगल करें, मंगल अरह जिनेश।
श्री मल्लि मंगल करें, मुनिसुव्रत तीर्थेश॥
श्री नमि मंगल करें, मंगल नेमि जिनेश।
श्री पार्श्व मंगल करें, महावीर तीर्थेश॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(छन्द ताटंक)

महत् अचल अद्भुत अविनाशी, केवलज्ञानी संत महान्।
शुभ दैदीप्यमान मनः पर्यय, दिव्य अवधि ज्ञानी गुणवान॥
दिव्य अवधि शुभ ज्ञान के बल से, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी॥1॥

यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् करना चाहिये।

जो कोष्ठस्थ श्रेष्ठ धान्योपम, एक बीज सम्भिन्न महान्।
शुभ संश्रोतृ पदानुसारिणी, चउ विधि बुद्धी ऋद्धीवान॥

शक्ती तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महा ऋद्धी धारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी॥2॥

श्रेष्ठ दिव्य मतिज्ञान के बल से, दूर से ही हो स्पर्शन।
श्रवण और आस्वादन अनुपम, गंध ग्रहण हो अवलोकन॥
पंचेन्द्रिय के विषय ग्राही, श्रेष्ठ महा ऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी॥3॥

प्रज्ञा श्रमण प्रत्येक बुद्ध शुभ, अभिन्न दशम पूरवधारी।
चौदह पूर्व प्रवाद ऋद्धि शुभ, अष्टांग निमित्त ऋद्धीधारी॥
शक्ति...॥4॥

जंघा अग्नि शिखा श्रेणी फल, जल तन्तू हों पुष्प महान्।
बीज और अंकुर पर चलते, गगन गमन करते गुणवान॥
शक्ति...॥5॥

अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, ऋद्धीधारी कुशल महान्।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारण करते जो गुणवान।
शक्ति...॥6॥

जो ईशत्व वशित्व प्राकम्पी, कामरूपिणी अन्तर्धान।
अप्रतिघाती और आप्ती, ऋद्धी पाते हैं गुणवान॥
शक्ति...॥7॥

दीप्त तप्त अरू महा उग्र तप, घोर पराक्रम ऋद्धी घोर।
अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धीधारी, करते मन को भाव विभोर॥
शक्ति...॥8॥

आमर्ष अरू सर्वौषधि ऋद्धी, आशीर्विष दृष्टी विषवान।
क्ष्वेलौषधि जल्लौषधि ऋद्धी, विडौषधी मल्लौषधि जान॥
शक्ति...॥9॥

क्षीर और घृतस्रावी ऋद्धी, मधु अमृतस्रावी गुणवान।
अक्षीण संवास अक्षीण महानस, ऋद्धीधारी श्रेष्ठ महान्॥
शक्ति...॥10॥

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्) परि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

ewyuk;d lfgr leqPp; iwtu

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र--गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण॥
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान॥
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक .... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं॥

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्ति नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मोंकृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार॥

शान्तये शांतिधारा...

दोहा– पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख-शांती सौभाग्यमय, होवे सकल समाज॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

पंच कल्याणक के अर्घ्य

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करें जो भाव से पावें निज स्थान॥1॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार॥2॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर॥3॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान॥4॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान॥5॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान॥

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ती जीवों में, और ना मिलते अन्य कहीं॥
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा॥1॥
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल॥
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते हैं पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण॥2॥
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश॥
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष॥3॥
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।

सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिन आगम जग उपकारी।।4।।
प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश।।5।।
वस्तु तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैरागय जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याय भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा– नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ती पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

बड़े बाबा विधान समुच्चय पूजा

स्थापना

ऋषभनाथ जी धर्म प्रवर्तन, करके दिए धर्म का ज्ञान।
षट् कर्मों की शिक्षा देकर, किया आपने जग कल्याण।।
बड़े बाबा की महिमा भाई, फैल रही हैं चारों ओर।
श्रीधर स्वामी मोक्ष गये हैं, यहाँ तपस्या करके घोर।।

दोहा– पूज्य बड़े बाबा बड़े, कुण्डलगिरि के धाम।
आह्वानन करते हृदय, करके चरण प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुषष्ठिऋद्धिसम्पन्न-अष्ट प्रातिहार्यसंयुक्त-सर्वविघ्नविनाशक-सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म वृषभनाथ भगवन्! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुषष्ठिऋद्धिसम्पन्न-अष्ट प्रातिहार्यसंयुक्त-सर्वविघ्नविनाशक-सर्वसिद्धिदायक- आदिब्रह्म वृषभनाथ भगवन्! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुषष्ठिऋद्धिसम्पन्न-अष्ट प्रातिहार्यसंयुक्त- सर्वविघ्नविनाशक-सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म वृषभनाथ भगवन्! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

तर्ज (चौबोला छन्द)

तृष्णा भटकाती है जग में, क्षण भंगुर यह जग ना जाना।
स्वाधीन सुखों को ना पाया, निज आत्मज्ञान से अंजाना।।
हम बड़े बाबा के चरणों में, नत सादर शीश झुकाते हैं।
प्रभु चलें आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुषष्ठिऋद्धिसम्पन्न-अष्ट प्रातिहार्यसंयुक्त-सर्वविघ्नविनाशक-सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म वृषभनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जीवन एक चुनौती है, जिसमें मानवता खिलती है।
समता धर जो नर धर्म करे, उसको ही सफलता मिलती है।।
हम बड़े बाबा के चरणों में, नत सादर शीश झुकाते हैं।
प्रभु चले आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुषष्ठिऋद्धिसम्पन्न-अष्ट प्रातिहार्यसंयुक्त-सर्वविघ्नविनाशक-सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म वृषभनाथ जिनेन्द्राय संसार-ताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम काला है सदियों से, मानस उज्ज्वल ना हो पाया।
भावों को शुद्ध किया जिसने, अक्षय पद उसने प्रगटाया॥
हम बड़े बाबा के चरणों में, नत सादर शीश झुकाते हैं।
प्रभु चले आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुषष्ठिऋद्धिसम्पन्न-अष्ट प्रातिहार्यसंयुक्त-सर्वविघ्नविनाशक-सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म वृषभनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तयेऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भयभीत कर्म से नहीं हुए, भोगों की नींद में सोये हैं।
छाये हैं दुःखों के बादल, कई बीज विषय के बोये हैं॥
हम बड़े बाबा के चरणों में, नत सादर शीश झुकाते हैं।
प्रभु चले आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुषष्ठिऋद्धिसम्पन्न-अष्ट प्रातिहार्यसंयुक्त-सर्वविघ्नविनाशक-सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म वृषभनाथ जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन हमने दिन रात किया, पर भूख शांत ना हो पाई।
अब आतम अमृत पान करे, यह विशद भावना मन आई॥
हम बड़े बाबा के चरणों में, नत सादर शीश झुकाते हैं।
प्रभु चले आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुषष्ठिऋद्धिसम्पन्न-अष्ट प्रातिहार्यसंयुक्त-सर्वविघ्नविनाशक-सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म वृषभनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छाया है मोह तिमिर निज में, सम्यग्दर्शन से दूर रहे।
निज आतम को ना जान सके, हम दुख पाने मजबूर रहे॥
हम बड़े बाबा के चरणों में, नत सादर शीश झुकाते हैं।
प्रभु चले आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुषष्ठिऋद्धिसम्पन्न-अष्ट प्रातिहार्यसंयुक्त-सर्वविघ्नविनाशक-सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म वृषभनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अब राग द्वेष की धूप बना, तप की अग्नी में खेना है।
है चित् स्वरूप मेरा पावन, उसमें ही अब चित्त देना है॥
हम बड़े बाबा के चरणों में, नत सादर शीश झुकाते हैं।
प्रभु चले आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुषष्ठिऋद्धिसम्पन्न-अष्ट प्रातिहार्यसंयुक्त-सर्वविघ्नविनाशक-सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म वृषभनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

है इच्छा मेरी अन्तिम ये, साधन मुक्ती का ना पाए।
शास्वत स्वरूप में रमण करें, अब और ना जग में भटकाए॥
हम बड़े बाबा के चरणों में, नत सादर शीश झुकाते हैं।
प्रभु चले आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुषष्ठिऋद्धिसम्पन्न-अष्ट प्रातिहार्यसंयुक्त-सर्वविघ्नविनाशक-सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म वृषभनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वचन काय हो अन्तर्मुख, जिससे निज में हम रमण करें।
पावन अनर्घ्य पद को पाने, हम मुक्ती पथ पर गमन करे॥
हम बड़े बाबा के चरणों में, नत सादर शीश झुकाते हैं।
प्रभु चले आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुषष्ठिऋद्धिसम्पन्न-अष्ट प्रातिहार्यसंयुक्त-सर्वविघ्नविनाशक-सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म वृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य-पद-प्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

दूज कृष्ण आषाढ़ माह की, मरुदेवी उर अवतारे।
रत्नवृष्टि छह माह पूर्व कर, इन्द्र किए शुभ जयकारे॥
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाएँ शुभकारी।
मुक्ती पथ पर बढ़ें हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त बड़े बाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

चैत्र कृष्ण नौमी को प्रभु ने, नगर अयोध्या जन्म लिया।
नाभिराय के गृह इन्द्रों ने, आनंदोत्सव महत् किया॥
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाएँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी॥2॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त बड़े बाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत्र कृष्ण नौमी को प्रभु ने, राग त्याग वैराग्य लिया।
संबोधन करके देवों ने, भाव सहित जयकार किया॥
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाएँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी॥3॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त बड़े बाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फाल्गुन वदी एकादशी को प्रभु, कर्म घातिया नाश किए।
लोकोत्तर त्रिभुवन के स्वामी, केवलज्ञान प्रकाश किए॥
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाएँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी॥4॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त बड़े बाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

माघ कृष्ण की चतुर्दशी को, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।
सुर नर किन्नर विद्याधर ने, आकर किया विशद् गुणगान॥
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाएँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी॥5॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त बड़े बाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– पूज्य बड़े बाबा कहे, महिमा बड़ी महान।
जयमाला गाते विशद, पाने शिव सोपान॥

(शम्भू छन्द)

कुण्डलपुर में श्री धर मुनि का, सिद्ध क्षेत्र अतिशय गाया।
अतिशय बड़े बाबा का फैला, अतिशय क्षेत्र जो कहलाया॥
मूर्ति मनोहर अतिशयकारी, सबके दुख हरने वाली।
श्रद्धालू भक्तों की भक्ती, कभी नहीं जावें खाली॥
किदवन्ती व्यापारी की हैं, अतिशय की गाथा गाए।
गाड़ी में प्रतिमा को लेकर, नगर पटेरा को आए॥
पीछे बजते वाद्य मनोहर, जिनकी पावन ध्वनि आती।
व्यापारी ने मुड़के देखा, गाड़ी वहीं पे रुक जाती॥
मुगल राज के शासन में वहाँ, पन्ना का राजा आया।
पूरी हुई कामना उसने, जीर्णोद्धार शुभ करवाया॥
नहीं चिह्न तीर्थेश कौन है, कोई जान नहीं पाए।
सुचिर काल से महावीर की, प्रतिमा सब कहते आए॥
परिकर में चक्रेश्वरी यक्षी, गोमुख यक्ष भी दिखलाया।
कर्ण कंध पर्यन्त मनोहर, केश विन्यास भी बतलाया॥
जिसको देख वास्तु विद् सारे, आदिनाथ भगवान कहे।
अतः बड़े बाबा को श्रावक, ऋषभ देव जी मान रहे॥
दर्श आपका मंगलमय है, मंगलमय शुभ नाम कहा।
ध्यान आपका मंगलमय है, मंगलमय शुभ धाम रहा॥
हे बाबा कुण्डलपुरवाले, करते हम तव चरण नमन।
हे जग पालक! हे उपकारक, कर दो मेरे कर्म शमन॥

दोहा– हम आए हैं द्वार पर, छोड़ जगत की आस।
पूर्ण होय मम् कामना, 'विशद' यही अरदाश॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः कुण्डलपुरक्षेत्रस्थ चतुष्षष्ठिऋद्धि सम्पन्न-अष्टप्रातिहार्यसंयुक्त-सर्वविघ्नविनाशक-सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म वृषभनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– अर्चा कर जिनराज की, जीवन हो अभिराम।
उभय लोक की सम्पदा, विशद मिले शिवधाम॥

(इत्याशीर्वाद)

अर्घावली

प्रथम वलयः

दोहा– सोलह कारण भावना, भाए आप विशेष।
तीर्थंकर पदवी विशद, पाए आदि जिनेश॥
(अथ प्रथम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

सोलहकारण भावना के अर्घ्य

(सखी छंद)

दर्शन विशुद्धि सुखदायी, शिवपद में कारण भाई।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥1॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि भावना सहिताय बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर विनय भाव के धारी, होते जग मंगलकारी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥2॥

ॐ ह्रीं विनय भावना सहिताय बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, बनते हैं शिवपद भोगी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥3॥

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगी भावना सहिताय बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत शील अनतिचार धारें, वे संयम रत्न सम्हारे।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥4॥

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचार भावना सहिताय बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवेग भाव जो पाते, भव से विरक्त हो जाते।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥5॥

ॐ ह्रीं संवेग भावना सहिताय बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो त्याग शक्तिसः करते, वे मुक्ति वधू को वरते।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥6॥

ॐ ह्रीं शक्तिस्त्याग भावना सहिताय बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सुतप शक्तिसः धारें, वे कर्म शत्रु को मारें।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥7॥

ॐ ह्रीं शक्तिस्तप भावना सहिताय बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं साधु समाधि के धारी, निज आतम ब्रह्म विहारी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥8॥

ॐ ह्रीं साधुसमाधि भावना सहिताय बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते जो वैय्यावृत्ती, उनकी है अलग प्रवृत्ती।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥9॥

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति भावना सहिताय बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते जो अर्हद् भक्ती, भव से पाते वे मुक्ती।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्ति भावना सहिताय बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य भक्ति सुखकारी, भवि जीवों को हितकारी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥11॥

ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति भावना सहिताय बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुश्रुत भक्ती धर ज्ञानी, होते जग में कल्याणी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥12॥

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्ति भावना सहिताय बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रवचन भक्ती के धारी, होते जिन धर्म प्रचारी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥13॥
ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति भावना सहिताय बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो आवश्यक अपरिहारी, बनते हैं शिवमगचारी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥14॥
ॐ ह्रीं आवश्यक अपरिहारी भावना सहिताय बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन मार्ग प्रभावक भाई, शिव नारि वरें सुखदायी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥15॥
ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना भावना सहिताय बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रवचन वत्सल जो पावें, वे केवलज्ञान जगावें।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते॥16॥
ॐ ह्रीं प्रवचनवत्सल भावना सहिताय बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सोलह कारण भावना, भायें हम हे नाथ!।
शिवपथ के राही बनें, चरण झुकाते माथ॥1॥
ॐ ह्रीं षोडशकारण भावना सहिताय बड़े बाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा– दश अतिशय प्रभु जन्म के, पाए महति महान।
आदिनाथ भगवान का, करें भक्त गुणगान॥
(अथ द्वितीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

जन्म के दश अतिशय

चौपाई

दश अतिशय जनमत जिन पाय, पूजत सुर नर हर्ष मनाय।
स्वेद रहित जिनवर तन पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय॥1॥
ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशय धारक बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल नहिं होय प्रभू तन मांहि, निर्मल रही देह सुख दाय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, श्री जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय॥2॥
ॐ ह्रीं निहार रहित सहजातिशय धारक बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम चतुष्क संस्थान जो पाय, हीनाधिक तन होवे नाय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय॥3॥
ॐ ह्रीं सह चतुस्र संस्थान सहजातिशय धारक बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्र वृषभ संहनन जो होय, अद्भुत शक्ति धारे सोय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय॥4॥
ॐ ह्रीं वज्रवृषभ नाराज संहनन सहजातिशय धारक बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगंधित पाते देह, भव्य जीव पावें स्नेह।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय॥5॥
ॐ ह्रीं सुगन्धित देह सहजातिशय धारक बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशयकारी सुंदर रूप, फीके पड़ें जगत् के भूप।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय॥6॥
ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशय धारक बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्षण एक सहस हैं आठ, सहस नाम जो पढ़ते पाठ।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय॥7॥
ॐ ह्रीं सहस्राष्ट लक्षण युक्त सहजातिशय धारक बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत रक्त प्रभु के तन होय, वात्सल्य महिमा युत सोय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय॥8॥
ॐ ह्रीं श्वेत रुधिर सहजातिशय धारक बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित मित प्रिय वचन सुखदाय, सुनकर हर प्राणी सुख पाय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय॥9॥

ॐ ह्रीं प्रियहित वचन सहजातिशय धारक बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बल अतुल्य पाये जिनदेव, जग के जीव करें पद सेव।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय॥10॥

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशय धारक बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– दश अतिशय प्रभु जन्म के, पाते हैं भगवान।
शिव पद पाने के लिए, करते हम गुणगान॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं दशातिशय प्राप्त बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा– दश अतिशय शुभ प्रकट हों, पाते केवल ज्ञान।
दिव्य देशना दें प्रभू, करें जगत कल्याण॥

(अथ तृतिय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

केवलज्ञान के अतिशय

(जोगीराशा छन्द)

शतक योजन दूर तक, प्रभु का जहां आसन रहा।
हो नहीं दुर्भिक्षता शुभ, क्षेत्र अति निर्मल कहा॥
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः गव्यूतिशत चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन में ही गमन होता, विशद यह अतिशय रहा।
पूर्व के शुभ पुण्य का फल, जैन आगम में कहा॥

ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः गगनगमनत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो नहीं अदया वहां पर, प्रभु का जहां आसन रहा।
धर्म का शुभ फल परस्पर, मित्रता होवे वहाँ॥
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अप्राणिवधत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो नहीं उपसर्ग कोई, ज्ञान केवल होय तब।
सुर पशु अरु नर अचेतन, नाश होते आप सब॥
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः उपसर्गाभाव घातिक्षयजातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा से पीड़ित दिखाई, दे रहा संसार है।
नाश की है क्षुधा पीड़ा, नहीं कवलाहार है॥
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः भुक्त्यभाव घातिक्षयजातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शोभते हैं जिन प्रभु जी, समवशरण के बीच में।
दे रहे दर्शन चतुर्दिक, रहें न भव कीच में॥
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुर्मखत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल विद्या के अधीपति, प्रभु जी ईश्वर कहे।
कर्म के नाशक प्रकाशक, प्रभु परमेश्वर रहे।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सर्वविद्येश्वरत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं छाया पड़े तन की, परमौदारिक तन रहा।
रहा विस्मय एक यह भी, ज्ञान का अतिशय कहा।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अच्छायत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केश अरु नख नहीं बढ़ते, ज्ञान की महिमा कही।
रहे ज्यों के त्यों सदा ही, धर्म की बलिहारी रही।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः समाननख केशत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पलक नहीं झपकें प्रभु के, बंद न खुलते कभी।
दर्श करते भव्य प्राणी, भाव से प्रभु के सभी।।
ज्ञान केवल प्रकट होते, स्वयं दश अतिशय जगें।
दर्श करके भव्य प्राणी, मोक्ष मारग में लगें।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अपक्ष्मस्पंदत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– दश अतिशय प्रभु ज्ञान के, प्रगटाते भगवान।
विशद ज्ञान पाने प्रभो! करते हम गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं दशातिशय प्राप्त बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा– चौदह अतिशय देवकृत, पावें प्रभू विशेष।
तीर्थंकर की दिव्यता, का दें सुर संदेश।।

(अथ चतुर्थ वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

चौदह देवकृत अतिशय

अर्ध मागधी भाषा पाय, श्री जिन का अतिशय कहलाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव विरोधी मैत्री पाय, श्री जिन का अतिशय कहलाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सर्वजन मैत्री–भाव देवोपनीतातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशों दिशा निर्मल हो जाय, श्री जिनवर अतिशय दिखलाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः शरदमेघवन्निर्मल दिग्विभागत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन पूर्ण निर्मलता पाय, श्री जिनवर अतिशय दिखलाए।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः शरत्कालवन्निर्मल गगनत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् ऋतु के फल फूल खिलाय, जहां विराजे श्रीजिनराय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सर्वऋतु शोभिततरु परिणाम देवोपनीतातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भूमि रत्नमयी हो जाय, दर्पण सम शोभा को पाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः आदर्शतल प्रतिमा रत्नमयी देवोपनीतातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहां प्रभु का पग पड़ जाय, स्वर्ण कमल सुर वहां रचाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः पादन्यासेकृत पद्मानि देवोपनीतातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंद सुगंधित पवन सुहाय, रोग शोक का नाश कराय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः विहरणमनुगतवायुत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय-जय ध्वनि से गगन गुंजाय, चऊ निकाय के सुर मिल आय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः एतैतैतिचतुर्निकायामर परस्पराह्वान देवोपनीतातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेघ कुमार देवता आय, पावन गंधोदक बरसाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम॥10॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः मेघकुमार कृत गन्धोदक वृष्टि देवोपनीतातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पवन कुमार देवता आय, निष्कंटक भूमि कर जाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम॥11॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपनीतातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का गमन जहां हो जाय, प्राणी सब आनंद मनाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम॥12॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सर्वजनपरमानन्दत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मचक्र आगे ले जाय, सर्वाण्ह यक्ष महिमा दिखलाय।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम॥13॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः धर्मचक्र चतुष्टय देवोपनीतातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य शुभ मंगल लाय, समवशरण में दिए सजाए।
देव करें सारा यह काम, प्रभु चरणों में करें प्रणाम॥14॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अष्टमंगल द्रव्य देवोपनीतातिशय गुणधारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– चौदह अतिशय देवकृत, पावें श्री जिनेन्द्र।
जिनकी अर्चा भक्ति से, करते सुर नर इन्द्र॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं देवकृत अतिशय प्राप्त बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलयः

दोहा– कर्म घातिया नाशकर, अनंत चतुष्टय सार।
प्रगटाते हैं जिन प्रभू, अतिशय मंगलकार॥

(अथ पंचम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अनन्त चतुष्टय के अर्घ्य

दर्श अनंत पाए जिनवर जी, सर्व लोक दर्शाये।
कर्म दर्शनावरणी नाशे, तिन पद शीश झुकायें॥
श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊं भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अनंत दर्शन गुण प्राप्ताय आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, केवलज्ञान प्रकाशे।
सर्व लोक के ज्ञाता श्रीजिन, सर्व चराचर भासे॥
श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊं भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अनंत ज्ञान गुण प्राप्ताय आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनीय को मोहित करके, ऐसा सबक सिखाया।
हार मान झुक गया चरण में, पास नहीं फिर आया॥
श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊं भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अनंत सुख गुण प्राप्ताय आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतराय का नाश किए प्रभु, बल अनंत प्रगटाया।
चरण शरण में आन झुकी हैं, सारे जग की माया॥
श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी।
अर्घ्य चढ़ाऊं भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अनंत वीर्य गुण प्राप्ताय आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– अनन्त चतुष्टय प्राप्त है, श्री जिनेन्द्र तीर्थेश।
महिमा गाते भाव से, पाने निज स्वदेश॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अनन्त चतुष्टय प्राप्त बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठम वलयः

दोहा– प्रातिहार्य वसु पाए हैं, आदिनाथ भगवान।
सुर नर पशु के इन्द्र सब, करें विशद गुणगान॥

(अथ षष्ठम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

प्रतिहार्य के अर्घ्य

तीन पीठिका युक्त सिंहासन, रत्न जड़ित है कान्तिमान।
कमलासन के ऊपर श्रीजिन, स्वर्णिम तन है आभावान॥
समवशरण में प्रभु विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सिंहासन प्रातिहार्य धारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरने वाला शोक जगत का, तरु अशोक कहलाता है।
पृथ्वी कायिक होता फिर भी, तरु की संज्ञा पाता है॥
समवशरण में प्रभु विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अशोक वृक्ष प्रातिहार्य धारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता की झालर से मण्डित, उज्ज्वल छत्र शोभते तीन।
तीन लोक की प्रभुता को जो, दिखलाने में रहे प्रवीन॥
समवशरण में प्रभु विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः छत्रत्रय प्रातिहार्य धारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के पीछे बना मनोहर, तेजस्वी शुभ भामण्डल।
कान्तिमान द्रव्यों का मानो, हो जाता है खण्डित बल॥
समवशरण में प्रभु विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः भामण्डल प्रातिहार्य धारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल दिव्य ध्वनि जिनकी शुभ, तीन लोक दर्शाती है।
भव्य जीव के मन मधुकर को, बार-बार हर्षाती है॥

समवशरण में प्रभु विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः दिव्यध्वनि प्रातिहार्य धारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊर्ध्व मुखी पुष्पों की वृष्टि, सुरगण करते भाव विभोर।
परम सुगन्धी महक रही है, प्रभु के आगे चारों ओर॥
समवशरण में प्रभु विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य धारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य वाद्य बजते है मनहर, देव दुन्दुभि कहलाती।
चतुर्दिशाओं को आभा से, सर्व लोक में महकाती॥
समवशरण में प्रभु विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः दुन्दुभि प्रातिहार्य धारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौसठ चँवर ढुराते मनहर, प्रभु के आगे दोनों ओर।
रत्नजड़ित हैं महिमा मण्डित, करते मन को भाव विभोर॥
समवशरण में प्रभु विराजे, जिनकी महिमा अपरम्पार।
तीन योग से वन्दन करते, जिनके चरणों बारम्बार॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुषष्ठि चामर प्रातिहार्य धारक आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– प्रातिहार्य पाए प्रभू, तीर्थंकर भगवान।
जिनकी महिमा का विशद, करते हैं गुणगान॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अष्ट प्रातिहार्य संयुक्त बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम वलयः

दोहा– आदिनाथ भगवान हैं, दोष अठारह हीन।
ज्ञाता दृष्टा हो प्रभू, रहे स्वयं में लीन॥

(अथ सप्तम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अष्टादश दोष रहित जिन के अर्घ्य

केवलज्ञानी होने वाले, क्षुधा वेदना खोने वाले।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः क्षुधा दोष रहित आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृषा दोष भी न रह पाए, जो भी केवलज्ञान जगाए।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः तृषा दोष रहित आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म दोष उसका नश जाए, जो भी केवलज्ञान जगाए।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः जन्म दोष रहित आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जरा दोष की होती हानी, बन जाते तो केवल ज्ञानी।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः जरा दोष रहित आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विस्मय दोष रहे न भाई, केवलज्ञानी के दुखदायी।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः विस्मय दोष रहित आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति दोष उनके भी खोवें, केवल ज्ञानी जो भी होवें।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः रति दोष रहित आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खेद दोष के होते त्यागी, केवल ज्ञानी बहु बड़भागी।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।7।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः खेद दोष रहित आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग देह में कभी न आवे, जो भी केवल ज्ञान जगावे।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।8।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः रोग दोष रहित आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में शोक कभी न लाते, जो नर केवल ज्ञान जगाते।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।9।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः शोक दोष रहित आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मद उनके कैसे रह पावे, जो भी केवल ज्ञान जगावे।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।10।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः मद दोष रहित आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह दोष के हैं वे नाशी, जो हैं केवलज्ञान प्रकाशी।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।11।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः मोह दोष रहित आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भय का क्षय उनके हो जावे, केवल ज्ञान मुनि प्रगटावे।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।12।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः भय दोष रहित आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निद्रा दोष त्यागते स्वामी, केवलज्ञानी अन्तर्यामी।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।13।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः निद्रा दोष रहित आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता उनके हृदय न आवे, जो तीर्थंकर पदवी पावें।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।14।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चिन्ता दोष रहित आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वेद रहे न तन में कोई, जिनने भव से मुक्ती पाई।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।15।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः स्वेद दोष रहित आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग-दोष उनका नश जाए, मुनिवर केवलज्ञान जगाए।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।16।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः राग दोष रहित आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में द्वेष कभी न लावें, विशद ज्ञान जो मुनि प्रगटावें।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।17।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः द्वेष दोष रहित आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मरण दोष के होते नाशी, केवल ज्ञानी शिवपुर वासी।
दोष अठारह के हैं नाशी, सिद्ध शिला के होते वासी।।18।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः मरण दोष रहित आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– दोष अठारह से रहित, होते श्री जिनेश।
कर्म विनाशे जिन प्रभू, धार दिगम्बर भेष।।7।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अष्टादश दोष रहिताय बड़ेबाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वलयः

दोहा– सिद्ध सुपद पाए प्रभू, आठो कर्म विनाश।
यह संसार असार तज, पाएँ शिवपुर वास।।

(अथ अष्टम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अष्टकर्म रहित जिन के अर्घ्य
(चाल टप्पा)

चक्षु दर्शनावरण आदि सब, घातक कर्म नशाई।
सकल ज्ञेय युगपद अवलोके, सद् दर्शन पाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, पूजों रे भाई॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अनंत दर्शन गुण प्राप्ताय आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उभय लोक षट् द्रव्य अनंता, युगपद दर्शाई।
निरावरण स्वाधीन अलौकिक, विशद ज्ञान पाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, पूजों रे भाई॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अनंत ज्ञान गुण प्राप्ताय आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुष्ट महाबली मोहकर्म का, नाश किए भाई।
निज अनुभव प्रत्यक्ष किए जिन, समकित गुण भाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, पूजों रे भाई॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अनंत सुख गुण प्राप्ताय आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतराय कर्मों ने शक्ती, आतम की खोई।
ते सब घात किये जिन स्वामी, बल असीम पाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, पूजों रे भाई॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अनंत वीर्य गुण प्राप्ताय आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नामकर्म के भेद अनेकों, नाश किये भाई।
चित्-स्वरूप चैतन्य जीव ने, सूक्ष्मत्व सुगुण पाई॥

जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, पूजों रे भाई॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सूक्ष्मत्व गुण प्राप्ताय आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकक्षेत्र अवगाह जीव के, संश्लेष पाई।
निज पर घाती कर्म नशाए, अवगाहन पाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, पूजों रे भाई॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अवगाहनत्व गुण प्राप्ताय आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊँच-नीच पद मैट निरन्तर, निज आतम ध्यायी
उत्तम अगुरुलघू गुण योगी, स्व-गुण प्रगटाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, पूजों रे भाई॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अगुरुलघु गुण प्राप्ताय आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित्य निरंजन भव जय भंजन, शुद्ध रूप ध्यायी।
अव्याबाध गुण प्रकट किए जिन, पूजों हर्षाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, पूजों रे भाई॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अव्याबाधत्व गुण प्राप्ताय आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

अष्ट गुणों को पाने वाले, सिद्ध प्रभु भाई।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजें हर्षाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, पूजों रे भाई॥8।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री सम्मत्तणाण दंसणवीर्य सुहुमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वाहं अष्टगुण प्राप्ताय आदिब्रह्म श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विशेष अर्घ्य

कर्म घातिया नाश किए प्रभु, केवलज्ञान जगाए।
श्री धर स्वामी कर्म नाशकर, शिव पदवी को पाए॥
जिन चरणों की पूजा करके, मन में हम हर्षाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं सिद्ध पद प्राप्त श्री धर केवलिनेनम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभ अजित श्रेयांस जिनेश्वर, शांति पार्श्व जिन अरह जिनेश।
चन्द्र सुविधि शीतल जिनवर जी, वीर नेमि जी कहे विशेष॥
तीर्थ क्षेत्र कुण्डलपुर जी में, अड़सठ हैं श्री जिन के धाम।
अर्घ्य चढ़ाकर जिनबिम्बों पद, करते बारम्बार प्रणाम॥2॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरि स्थित सर्व जिनालयेभ्यो सर्व जिनबिम्बेभ्यों नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहा सरोवर वर्धमान शुभ, कुण्डल गिरि पर्वत के पास।
वर्धमान का बना जिनालय, अर्चा कर हो पूरी आस॥
विशद भाव से अर्घ्य चढ़ाते, जिनके चरणों मंगलकार।
तीन योग से वन्दन करते, जिन पद में हम बारम्बार॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नम: वर्धमान सरोवर स्थित वर्धमान जिन चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बड़े बाबा श्री आदिनाथ का, मध्य बना मंदिर शुभकार।
अन्य जिनालय शोभा पाते, चारों दिश में मंगलकार॥
शिखरों पर कलशा ध्वज सोहें, घण्टा तोरण युक्त महान।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र का, करते हम पावन गुणगान॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं बड़े बाबा नम: आदिब्रह्म श्री ऋषभदेव सहित कुण्डलगिरि स्थित सर्व जिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नम:

समुच्चय जयमाला

दोहा– बड़े बाबा जी पूज्य हैं, तीनों लोक त्रिकाल।
जिनकी गाते आज हम, भाव सहित जयमाल॥
हे बड़े बाबा जी शरण गही मैं तेरी,
अब कर दो प्रभु कल्याण करो ना देरी॥टेक॥

तुम गुण अनन्त के कोष जगत के ज्ञाता,
तुम जिन शासन की शान जग विख्याता।
तव चरणों में साधर्मी पावे साता,
तुम जग के पालन हार जगत के त्राता॥
प्रभु तुम बिन रक्षा कौन करेगा मेरी–अब कर...॥1॥
षट्कर्म का उपदेश दे सुयश तुम पाया,
संयम को पाकर केवल ज्ञान जगाया।
तब धन कुबेर ने समवशरण बनवाया,
शुभ दिव्य ध्वनि का लाभ सभी ने पाया॥
हुई पुष्प वृष्टि इन्द्रादि बजाए भेरी, अब कर...॥2॥
है जिला दमोह जो मध्य प्रदेश में गाया,
कुण्डलगिरि कुण्डलपुर के पास बताया।
इस तीर्थ क्षेत्र की है अनुपम शुभ माया,
कई मंदिर बीच में बड़े बाबा का पाया॥
क्या कलाकार ने अद्‌भुत मूर्ति उकेरी, अब कर...॥3॥
है पद्मासन में प्रभु की प्रतिमा प्यारी,
जो जग जीवों के लिए बहुत उपकारी।
जब ओरंगजेब ने मूर्ति पे छेनी मारी,
तब बही दुग्ध की धार श्रेष्ठ मनहारी॥
रक्षा को पद्मावति बन आई चेरी, अब कर...॥4॥
तब मधुमक्खियों ने दुष्ट को बहुत सताया,
वह डर के भागा चली कोई ना माया।
पन्ना का राजा हार के वहाँ पे आया,
प्रभु की भक्ती कर राज्य पुन: जो पाया॥
वह जीर्णोद्धार कराया करी ना देरी, अब कर....॥5॥
जो आश लगाकर प्रभु के दर पर आया,
सुख शांती अरु सौभाग्य सभी कुछ पाया।
शिशु हीन ने नव शिशु पाके गोद खिलाया,
जिसने जो कुछ चाहा दर पे वह पाया॥
कभी ना खाली गई भक्त की झोली, अब कर...॥6॥
हे नाथ! आप जिन शासन के रखवारे,
सद् श्रद्धान जगावे श्रावक आके द्वारे।

हम दर्शन के हैं चातक दास तुम्हारे,
शिव राह दिखाओ हमको नाथ! हमारे॥
अब 'विशद' ज्ञान पाएँ नशे ज्ञान अंधेरी, अब कर...॥7॥

दोहा– श्रीधर की निर्वाण भू, बड़े बाबा का धाम।
'विशद' वन्दना कर रहे, करके चरण प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः कुण्डलपुर क्षेत्रस्थ चतुषष्ठिऋद्धिसम्पन्न-अष्ट प्रातिहार्यसंयुक्त-सर्वविघ्नविनाशक-सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म वृषभनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– वृष के हैं भण्डार जिन, वृषभनाथ भगवान।
चरण वन्दना कर रहे, पाने पद निर्वाण॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

आरती कुण्डलपुर के बड़े बाबा की

तर्ज–आज करें हम.......

आज करें हम बड़े बाबा की, आरति मंगलकारी।
घृत का दीप जलाकर लाए, बाबा तुमरे द्वार॥
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती॥टेक॥
नाभिराय मरु देवि के नन्दन, आदिनाथ कहलाए।
नगर अयोध्या जन्म लिया प्रभु, मोक्ष मार्ग अपनाए
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती॥1॥
धर्म प्रवर्तन करने वाले, हैं आदीश्वर स्वामी।
षट् कर्मों के शिक्षा दाता, जिनवर अन्तर्यामी॥
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती॥2॥
धनुष पाँच सौ शुभ ऊँचाई, स्वर्ण वर्ण के धारी।
आयू लाख चुरासी पाये, तीर्थंकर अविकारी॥
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती॥3॥
बड़े बाबा की बड़ी मूर्ती, पावन है मनहारी।
वीतराग दर्शाने वाली, सुन्दर अतिशयकारी॥
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती॥4॥
प्रभु चरणों में 'विशद' भाव से, जो भी शीश झुकाते।
मनोकामना पूरी करके, इच्छित फल को पाते॥
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती॥5॥

बड़े बाबा चालीसा

दोहा– कुण्डलपुर जी के बड़े, बाबा बड़े विशाल।
चालीसा गाते विशद, करके नमन त्रिकाल॥
सिद्ध क्षेत्र अतिशय रहा, जग में पूज्य महान।
आदिनाथ के चरण की, पद रज पूजे आन॥

(चौपाई)

पावन भारत देश कहाया, जिसमें मध्य प्रदेश बताया।
जिला दमोह श्रेष्ठ शुभ जानो, तीर्थ क्षेत्र कुण्डलपुर मानो॥
पूज्य बड़े बाबा कहलाए, सारा जग ये महिमा गाए।
श्री धर जी यहाँ मुक्ती पाए, सिद्ध क्षेत्र अतएव कहाए॥
वीतराग मुद्रा मनहारी, पद्मासन है मंगलकारी।
कुण्डल जैसा पर्वत गाया, कुण्डलपुर अतएव कहाया॥
ग्राम पटेरा का व्यापारी, गाँव गाँव जाता पग चारी।
कर व्यापार गाँव को आए, पत्थर से वह ठोकर खाए॥
पत्थर खोद निकाला जाए, मन में ऐसे भाव बनाए।
किन्तू खोद नहीं वह पाया, लौट के घर को वापस आया॥
रात में उसको सपना आया, गाड़ी लेकर वहाँ बुलाया।
मूर्ती एक यहाँ से पाओ, गाँव में अपने तुम ले जाओ॥
गाड़ी आगे चले तुम्हारी, पीछे वाद्य बजेंगे भारी।
पीछे नहीं देखना भाई, व्यापारी से बात सुनाई॥
वरना गाड़ी रुक जाएगी, नहीं गाँव तक जा पाएगी।
प्रातः गाड़ी ले व्यापारी, साथ में लेकर चला कुदारी॥
जाकर वहाँ पे करी खुदाई, बड़े बाबा की मूर्ती पाई।
चला मूर्ति ले ज्यों व्यापारी, अद्भुत वाद्य बजे थे भारी॥
मुड़कर उसने देखा जैसे, गाड़ी रुकी वही पर वैसे।
व्यापारी मन में पछताया, मन्दिर उसी जगह बनवाया॥
पर्वत पर ऐसे प्रभु आये, अतिशय प्रभु जी कई दिखाए।
औरंगजेब आया था मानी, मूर्ति तोड़ने की वह ठानी॥
पग में उसने छेनी लगाई, पग से दूध की धार बहाई।

मधु मक्खियाँ आईं भारी, नृप की सेना भागी सारी।।
मन में तब राजा घबड़ाया, अपनी गलती पर पछताया।
छत्रशाल राजा भी आया, मंदिर जीर्णोद्धार कराया।।
उस पर कृपा प्रभू बरसाई, राज्य सम्पदा उसने पाई।
भाव सहित महिमा जो गाते, अपने वे सौभाग्य जगाते।।
मंदिर त्रेसठ हैं शुभकारी, एक से बढ़कर अतिशयकारी।
कुछ पर्वत के ऊपर सोहें, कुछ नीचे सबका मन मोहें।।
नीचे एक सरोवर पाया, वर्धमान सागर कहलाया।
उसमें एक जिनालय गाया, मानो पावापुर कहलाया।।
दूर-दूर से यात्री आते, पूजा करते आरती गाते।
साधू आके दर्शन पाते, गिरि के ऊपर ध्यान लगाते।।
श्रावक गाते भजनावलियाँ, खिलती उनके मन की कलियाँ।
एक समाधी केन्द्र यहाँ है, रुकते त्यागी व्रती जहाँ हैं।।
निर्धन धन सम्पत्ती पावें, रोगी रोग से मुक्ती पावें।
पुत्रहीन सुत पा हर्षावें, भाग्य हीन सौभाग्य जगावें।।
''विशद्'' भावना हम यह भाते, पद में सादर शीश झुकाते।
पूर्ण करो तुम हे त्रिपुरारी, बनें मोक्ष के हम अधिकारी।।

दोहा– भाव सहित हमने किया, लघुतम यह गुणगान।
भूल चूक सब माफ हो, क्षमा करो भगवान।।
चालीसा जो भी पढ़े, जीवन में अविराम।
सफल होयेंगे शीघ्र ही, उनके पूरे काम।।

प्रशस्ति

ॐ नमः सि)भ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे राजस्थान प्रान्ते अलवर जिला अन्तर्गत तिजारा नाम नगरे १००८ श्री चन्द्रप्रभु अतिशय क्षेत्र देहरा चातुर्मास जैनेश्वरी दीक्षा मधये अवसरे निर्वाण संवत २५४१ वि.सं. २०७१ मंगसिर मासे कृष्ण पक्षे सप्तमी गुरुवासरे बड़े बाबा विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

समुच्चय महाअर्घ्य

पूज रहे अरहंत देव को, और पूजते सिद्ध महान्।
आचार्योपाध्याय पूज्य लोक में, पूज्य रहे साधू गुणवान।।
कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालय, चैत्य पूजते मंगलकार।
सहस्रनाम कल्याणक आगम, दश विध धर्म रहा शुभकार।।
सोलहकारण भव्य भावना, अतिशय तीर्थक्षेत्र निर्वाण।
बीस विदेह के तीर्थंकर जिन, 'विशद' पूज्य चौबिस भगवान।।
ऊर्जन्यन्त चम्पा पावापुर, श्री सम्मेद शिखर कैलाश।
पञ्चमेरु नन्दीश्वर पूजें, रत्नत्रय में करने वास।।
मोक्षशास्त्र को पूज रहे हम, बीस विदेहों के जिनराज।
महा अर्घ्य यह नाथ! आपके, चरण चढ़ाने लाए आज।।

दोहा– जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
सर्व पूज्य पद पूजते, चरण झुकाकर माथ।।

ॐ ह्रीं श्री भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करे करावे भावना भावे श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शन-विशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यगज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर-नगरी विषै, ऊर्ध्व लोक मध्य लोक पाताल लोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बिभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाश, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, राजगृही, मथुरा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, हस्तिनापुर, चंदेरी, पपोरा, अयोध्या, शत्रुञ्जय, तारङ्गा,

चमत्कारजी, महावीरजी, पदमपुरी, तिजारा, विराटनगर, खजुराहो, श्रेयांशगिरि, मक्सी पार्श्वनाथ, चंवलेश्वर आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः। ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशंतितीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे..... देश.... प्रान्ते.... नाम्नि नगरे.... मासानामुत्तमे.. .. मासे शुभ पक्षे.... तिथौ.... वासरे....मुनि आर्यिकानां श्रावक-श्राविकानां सकल कर्मक्षयार्थं अनर्घ पद प्राप्तये संपूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

(शम्भू छंद)

चन्द्र समान सुमुख है जिनका, शील सुगुण संयम धारी।
लज्जित करते नयन कमल दल, सहस्राष्ट लक्षण धारी।।
द्वादश मदन चक्री हो पंचम, सोलहवें तीर्थंकर आप।
इन्द्र नरेन्द्रादि से पूजित, जग का हरो सकल संताप।।
सुरतरु छत्र चँवर भामण्डल, पुष्प वृष्टि हो मंगलकार।
दिव्य ध्वनि सिंहासन दुन्दुभि, प्रातिहार्य ये अष्ट प्रकार।।
शांतिदायक हे शांति जिन! श्री अरहंत सिद्ध भगवान।
संघ चतुर्विध पढ़ें सुनें जो, सबको कर दो शांति प्रदान।।
इन्द्रादि कुण्डल किरीटधर, चरण कमल में पूजें आन।
श्रेष्ठ वंश के धारी हे जिन!, हमको शांति करो प्रदान।।
संपूजक प्रतिपालक यतिवर, राजा प्रजा राष्ट्र शुभदेश।
'विशद' शांति दो सबको हे जिन!, यही हमारा है उद्देश।।
होय सुखी नरनाथ धर्मधर, व्याधी न हो रहे सुकाल।
जिन वृष धारे देश सौख्यकर, चौर्य मरी न हो दुष्काल।।

(चाल छन्द)

जिनघाति कर्म नशाए, कैवल्य ज्ञान प्रगटाए।
हे वृषभादि जिन स्वामी, तुम शांती दो जगनामी।।

हे शास्त्र पठन शुभकारी, सत्संगति हो मनहारी।
सब दोष ढ़ाँकते जाएँ, गुण सदाचार के गाएँ।।
हम वचन सुहित के बोलें, निज आत्म सरस रस घोलें।
जब तक हम मोक्ष न जाएँ, तब तक चरणों में आएँ।।
तब पद मम हिय वश जावें, मम हिय तव चरण समावें।
हम लीन चरण हो जाएँ, जब तक मुक्ती न पाएँ।।

दोहा– **वर्ण अर्थ पद मात्रा में, हुई हो कोई भूल।**
क्षमा करो हे नाथ सब, भव दुख हों निर्मूल।।
चरण शरण पाएँ 'विशद', हे जग बन्धु जिनेश।
मरण समाधी कर्म क्षय, पाएँ बोधि विशेष।।

विसर्जन पाठ

जाने या अन्जान में, लगा हो कोई दोष।
हे जिन! चरण प्रसाद से, होय पूर्ण निर्दोष।।
आह्वानन पूजन विधि, और विसर्जन देव।
नहीं जानते अज्ञ हम, कीजे क्षमा सदैव।।
क्रिया मंत्र द्रवहीन हम, आये लेकर आस।
क्षमादान देकर हमें, रखना अपने पास।।
सुर-नर-विद्याधर कोई, पूजा किए विशेष।
कृपावन्त होके सभी, जाए अपनेदेश।।

इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्

आशिका लेने का पद

दोहा– **लेकर जिनकी आशिका, अपने माथ लगाय।**
दुख दरिद्र का नाश हो, पाप कर्म कट जाय।।

(कायोत्सर्ग करें)

प. पू. आचार्य गुरुवर श्री विशदसागरजी का चालीसा

दोहा– क्षमा हृदय है आपका, विशद सिन्धु महाराज।
दर्शन कर गुरुदेव के, बिगड़े बनते काज॥
चालीसा लिखते यहाँ, लेकर गुरु का नाम।
चरण कमल में आपके, बारम्बार प्रणाम॥

(चौपाई)

जय श्री 'विशद सिन्धु' गुणधरी, दीनदयाल बाल ब्रह्मचारी।
भेष दिगम्बर अनुपम धरे, जन-जन को तुम लगते प्यारे॥
नाथूराम के राजदुलारे, इंदर माँ की आँखों के तारे।
नगर कुपी में जन्म लिया है, पावन नाम रमेश दिया है॥
कितना सुन्दर रूप तुम्हारा, जिसने भी इक बार निहारा।
बरवश वह फिर से आता है, दर्शन करके सुख पाता है॥
मन्द मधुर मुस्कान तुम्हारी, हरे भक्त की पीड़ा सारी।
वाणी में है जादू इतना, अमृत में आनन्द न उतना॥
मर्म धर्म का तुमने पाया, पूर्व पुण्य का उदय ये आया।
निश्छल नेह भाव शुभ पाया, जन-जन को दे शीतल छाया॥
सत्य अहिंसादि व्रत पाले, सकल चराचर के रखवाले।
जिला छतरपुर शिक्षा पाई, घर-घर दीप जले सुखदाई॥
गिरि सम्मेदशिखर मनहारी, पार्श्वनाथजी अतिशयकारी।
गुरु विमलसागरजी द्वारा, देशव्रतों को तुमने धरा॥
गुरु विरागसागर को पाया, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाया।
है वात्सल्य के गुरु रत्नाकर, क्षमा आदि धर्मों के सागर॥
अन्तर में शुभ उठी तरंगे, सद् संयम की बढ़ी उमंगें।
सन् तिरान्वे श्रेयांसगिरि आये, दीक्षा के फिर भाव बनाए॥
दीक्षा का गुरु आग्रह कीन्हें, श्रीफल चरणों में रख दीन्हें।
अवसर श्रेयांसगिरि में आया, ऐलक का पद तुमने पाया॥
अगहन शुक्ल पञ्चमी जानो, पचास बीससौ सम्वत् मानो।
सन् उन्नीस सौ छियानवे जानो, आठ फरवरी को पहिचानो॥

विरागसागर गुरु अंतरज्ञानी, अन्तर्मन की इच्छा जानी।
दीक्षा देकर किया दिगम्बर, द्रोणगिरी का झूमा अम्बर॥
जयकारों से नगर गुँजाया, जब तुमने मुनि का पद पाया।
कीर्ति आपकी जग में भारी, जन-जन के तुम हो हितकारी॥
परपीड़ा को सह न पाते, जन-जन के गुरु कष्ट मिटाते।
बच्चे बूढ़े अरु नर-नारी, गुण गाती है दुनियाँ सारी॥
भक्त जनों को गले लगाते, हिल-मिलकर रहना सिखलाते।
कई विधन तुमने रच डाले, भक्तजनों के किए हवाले॥
मोक्ष मार्ग की राह दिखाते, पूजन भक्ती भी करवाते।
स्वयं सरस्वती हृदय विराजी, पाकर तुम जैसा वैरागी॥
जो भी पास आपके आता, गुरु भक्ती से वो भर जाता।
'भरत सागर' आशीष जो दीन्हें, पद आचार्य प्रतिष्ठा कीन्हें॥
तेरह फरवरी का दिन आया, बसंत पंचमी शुभ दिन पाया।
जहाँ-जहाँ गुरुवर जाते हैं, धरम के मेले लग जाते हैं॥
प्रवचन में झंकार तुम्हारी, वाणी में हुँकार तुम्हारी।
जैन-अजैन सभी आते हैं, सच्ची राहें पा जाते हैं॥
एक बार जो दर्शन करता, मन उसका फिर कभी न भरता।
दर्शन करके भाग्य बदलते, अंतरमन के मैल हैं धुलते॥
लेखन चिंतन की वो शैली, धे दे मन की चादर मैली।
सदा गूँजते जय-जयकारे, निर्बल के बस तुम्ही सहारे॥
भक्ती से हम शीश झुकाते, 'विशद गुरु' तुमरे गुण गाते।
चरणों की रज माथ लगावें, करें 'आरती' महिमा गावें॥

दोहा– 'विशद सिन्धु' आचार्य का, करें सदा हम ध्यान।
माया मोह विनाशकर, हरें पूर्ण अज्ञान॥
सूर्योदय में नित्य जो, पाठ करें चालीस।
सुख-शांति सौभाग्य का, पावे शुभ आशीष॥

– ब्र. आरती दीदी

प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित पूजन महामंडल विधान साहित्य सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभु महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ जी महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. लघु पंचमेरू विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पतिविधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषि मण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्वार्थसूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
59. श्री दशलक्षण धर्म विधान
60. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
61. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
62. अभिनव वृहद कल्पतरू विधान
63. वृहद श्री समवशरण मण्डल विधान
64. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
65. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
66. कालसर्पयोग निवारक मण्डल विधान
67. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
68. श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान
69. त्रिविधान संग्रह–1
70. त्रि विधान संग्रह
71. पंच विधान संग्रह
72. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
73. लघु धर्म चक्र विधान
74. अर्हत महिमा विधान
75. सरस्वती विधान
76. विशद महाअर्चना विधान
77. विधान संग्रह (प्रथम)
78. विधान संग्रह (द्वितीय)
79. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गांव)
80. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
81. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
82. अर्हत नाम विधान
83. सम्यक् अराधना विधान
84. श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान
85. लघु नवदेवता विधान
86. लघु मृत्युँजय विधान
87. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
88. मृत्युञ्जय विधान
89. लघु जम्बू द्वीप विधान
90. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
91. क्षायिक नवलब्धि विधान
92. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
93. श्री गोम्मटेश बाहुबली विधान
94. वृहद निर्वाण क्षेत्र विधान
95. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
96. तीन लोक विधान
97. कल्पद्रुम विधान
98. श्री चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान
99. श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान
100. श्री सहस्त्रनाम विधान (लघु)
101. श्री त्रैलोक्य मण्डल विधान (लघु)
102. श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
103. पुण्यास्त्रव विधान
104. सप्तऋषि विधान
105. तेरहद्वीप विधान
106. श्री शान्ति,कुन्थु, अरहनाथ मण्डल विधान
107. श्रावकव्रत दोष प्रायश्चित विधान
108. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
109. सम्यक् दर्शन विधान
110. श्रुतज्ञान व्रत विधान
111. ज्ञान पच्चीसी व्रत विधान
112. तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान
113. विजय श्री विधान
114. चारित्र शुद्धि विधान
115. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान
116. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)
117. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)
118. दिव्यध्वनि विधान
119. षट्खण्डागम विधान
120. श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान
121. विशद पञ्चागम संग्रह
122. जिन गुरु भक्ती संग्रह
123. धर्म की दस लहरें
124. स्तुति स्तोत्र संग्रह
125. विराग वंदन
126. बिन खिले मुरझा गए
127. जिंदगी क्या है
128. धर्म प्रवाह
129. भक्ती के फूल
130. विशद श्रमण चर्या
131. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
132. इष्टोपदेश चौपाई
133. द्रव्य संग्रह चौपाई
134. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
135. समाधितन्त्र चौपाई
136. शुभषितरत्नावली
137. संस्कार विज्ञान
138. बाल विज्ञान भाग-3
139. नैतिक शिक्षा भाग-1, 2, 3
140. विशद स्तोत्र संग्रह
141. भगवती आराधना
142. चिंतवन सरोवर भाग-1
143. चिंतवन सरोवर भाग-2
144. जीवन की मन:स्थितियाँ
145. आराध्य अर्चना
146. आराधना के सुमन
147. मूक उपदेश भाग-1
148. मूक उपदेश भाग-2
149. विशद प्रवचन पर्व
150. विशद ज्ञान ज्योति
151. जरा सोचो तो
152. विशद भक्ती पीयूष
153. विजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
154. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह

नोट : उपरोक्त 120 विधानों में से अधिकाधिक विधान कर अथाह पुण्याभव करें। –मुनि विशालसागर